अनुष्का पाण्डेय

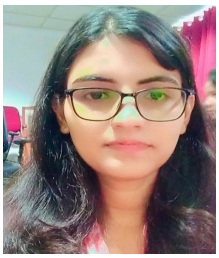

अनुष्का उन्मुक्ता के नाम से कविताएं लिखती हैं । वर्तमान में काशी हिंदू विश्वविद्यालय में स्नातक अन्तिम वर्ष की छात्रा हैं।
स्थायी पता- कृष्णा नगर, मऊ रोड, सिधारी, आज़मगढ़, उत्तर प्रदेश

यात्रा

साल आते और जाते हैं
निकल जाते हैं आगे लोग
कोई दौड़ता है
कोई सरपट भागता है
कोई कछुआ तो कोई खरगोश
यहाँ सब कुछ न कुछ बनना चाहते हैं
सिवा इस बात के कोई बात नहीं
कि निकल जाना है आगे
बहुत आगे
चाहे छूट जाए अपनी ज़मीन
अपनी दुनिया
मैं गंगा की रेती पर बैठी
रेत के नन्हें कण की तरह मिटने के बाद भी
बचे रहना चाहती हूँ निर्माण की यात्रा में
बस एक कण इतना....

गंगा

गंगा एक नदी है
मेरा मन भी एक नदी है
दोनों बहते हैं धीरे-धीरे
कितना कुछ सहते...
कितना कुछ कहते...
एक यात्रा
मन से नदी तक की
समुद्र की चाहत में...

तुम अथाह हो सकते हो

बहुत गहरे
बहुत विशाल
ठीक समुद्र की तरह
और मैं छोटी सी नदी
बहुत छोटी
इतनी की तुम देख भी न सको
पर कितना अन्तर है
मुझमें और तुममें
मैं मीठी
तुम खारे...

सच

कितनी सुन्दर है यह दुनिया
कितनी बड़ी
कुछ सवाल और उनके हल तलाशती मैंई
कभी सड़क तो कभी गली के रास्ते
चलती हूँ और खोजती हूँ उस दुनिया को
जो सुन्दर है और बहुत बड़ी भी
अचानक गंगा के किनारे
घाट पर ठहर जाती हूँ
उस लड़के के नाचते लट्टू और उँगलियों के बीच
एक रस्सी भर है दुनिया
कोई नचाता है तो कोई नांचता है....

सीख

सब सिखाते हैं मुझे
पानी और हवा
मिट्टी और गंध
आँसू और हँसी
सुख और दु:ख
सब सिखाते हैं मुझे
चलते हुए
बोलते हुए
रोते हुए

हँसते हुए

सब सिखाते हैं मुझे
दोस्त और दुश्मन
अपने और पराए
खेत और खलिहान
धरती और आकाश

सब सिखाते हैं मुझे
मुझे इनसे मिलते है रंग
जीवन और मरण के
मिलने और बिछड़ने के
इतने सारे शिक्षक और मैं तिनका भर
पढ़ रही हूँ किताबों संग सबको
समझ रही हूँ किताबों के रूप
प्रकृति की रची पुस्तकें
उतनी ही जरूरी लगीं
जितनी स्कूल की किताबें...

रात

स्याह काली रात
चाँदनी सी उजली रात
कभी धूसर तो कभी मटमैली रात
अपने बाहें के झूले में मुझे बिठा लेती है

मुझे रात कभी अकेले नहीं मिली
जब भी मिली
कुछ सपनों के मोती पिरो गयी आँखों में....

दिन

कैसे - कैसे दिन
सुख के दिन
दुख के दिन
आशा और निराशा से भरे दिन

कैसे -कैसे दिन
मिलने का दिन
विदा होने का दिन
पहला दिन
आखिरी दिन

इतने सारे दिन
मैं देखती हूँ एकटक
दिन की यात्रा को
दिन है कि ठहरता ही नहीं।

कविता

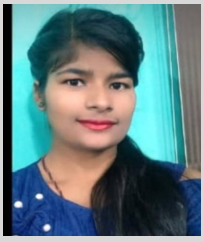

बबीता कुमारी

भरोसा

हमें है भरोसा,
अपने काबिलियत पर।
अपने मंजिल को पाने की।।
माता - पिता को है भरोसा,
अपने संतानों पर।
अपने दिए गए संस्कारों की।।
माली को है भरोसा,
अपने कर्मों पर।
बगिया में फूल खिलने की।।
हमें रखनी है,
इसी भरोसे पे भरोसा।
एक दिन अपने जीवन को
सफल बनाने की।।